ओम् शान्ति 25-8-09 मधुबन

दादी जी के दूसरे पुण्य स्मृति दिवस पर, बापदादा का मधुर सन्देश

– दादी गुल्जार

(आज दादी जी के पुण्य स्मृति दिवस पर दादी गुल्जार बापदादा को भोग लगा रही हैं, सभी ने बहुत स्नेह से प्यारी दादी जी का आह्वान किया, दादी जी कुछ समय के लिए सभा के बीच में पधारी और हाथ हिलाते, बहुत स्नेह भरी दृष्टि द्वारा नयन मुलाकात करते वापस वतन में चली गई। इस अवसर पर गीता पाठशाला के निमित्त भाई बहिनों की भट्ठी चल रही है। इसके साथ–साथ अन्य महारथी भाई बहिनें भी पहुंचे हुए हैं, आज करीब 10 हजार से भी अधिक सभा डायमण्ड हाल में उपस्थित है. उसके पहले सभी ने दादी जी के यादगार प्रकाश स्तम्भ पर जाकर अपनी पुष्पांजलि अर्पित की)

दिव्य सन्देश:-

आज आप सबका यादप्यार लेते हुए बाबा के पास पहुंची तो वहाँ पहुंचते ही क्या देखा? जो हमारी एडवांस पार्टी की विशेष आत्मायें गई हैं, उन्हों के साथ बाबा बहुत ही रमणीक चिटचैट कर रहे थे और हमारी दादी बाबा के गले में हाथ डालकर बैठी हुई थी। मैंने कहा दादी आज आप बाबा के गले में बांहें डालकर बैठी हो! तो कहा मैं तो सदा बांहों में रहती हूँ। मैंने कहा अभी तो हम बांहों में रहते हैं, आप कहाँ रहती हो! तो दादी कहने लगी बाबा आप इनको इनको बताओ कि मैं कैसे बांहों में रहती हूँ! तो बाबा मुस्कराये। आज मम्मा, दीदी और मुख्य सभी वतन में इमर्ज थे, हम भी एक एक को देखकर खुश हो रही थी। तो सभी ने कहा हम आपसे भी ज्यादा बाबा से मिलते हैं। हमने कहा हम तो योग द्वारा सारा दिन मिलते हैं, सारा दिन बाबा के साथ रहते हैं। आप कैसे रहती हो? तो सभी ने कहा कि हमारा अमृतवेला रोज़ बाबा के साथ ही होता है क्योंकि अमृतवेले के संस्कार हम सबके पक्के हैं, उस समय तो सब सोये हुए होते हैं। 4 से 6 तक हम सभी बाबा के पास वतन में आते हैं। बाबा कभी हम लोगों को सेवा पर ले जाते हैं, कभी मन्दिरों में भेजते हैं। कभी बाबा हमको अर्ध चन्द्रमा के रूप में बिठाकर खुद बीच में बैठता है और सबको सकाश दिलाता है। दादी ने कहा वह सीन तो आपने भी नहीं देखी है। तो मैं मुस्करा रही थी। फिर बाबा ने कहा कि इन बच्चों का जन्म कर्मो के हिसाब से नहीं हुआ है। इनका यह जन्म सेवा के हिसाब से है, तो इनमें सेवा के ही संस्कार हैं इसलिए बाबा इनसे भिन्न-भिन्न प्रकार से सेवा कराता है। फिर मैंने कहा दादी अभी आपका प्लैन क्या है? आप क्या ऐसे ही सेवा करती रहेंगी? आप अमृतवेले सेवा करके फिर बच्चे रूप में क्या करती हैं? तो दादी ने सुनाया कि वहाँ मॉ बाप और नजदीक जो संबंधी हैं, वह जब हमारे को देखते हैं तो उन्हें बहुत आकर्षण होती है। ज्ञान तो इमर्ज नहीं है, लेकिन जहाँ भी हम गये हैं, वहाँ उन सबको हमारे मस्तक के तरफ देखने की इच्छा होती है। समझते हैं यह कोई खास अलग आत्मायें हैं। हमारे माँ बाप गुप्त रीति से अपना अनुभव अन्य संबंधियों को सुनाते हैं कि इनके मस्तक से कुछ न्यारापन लगता है, इन्हों में कुछ विशेष है। ऐसे लगता है जैसे इनके मस्तक में ही देखते रहें। मस्तक में देखकर हमको बहुत खुशी होती है। दु:ख भूल जाता है। मैंने फिर पूछा दादी आप और क्या सर्विस करती हो? तो दादी ने कहा कि हमारा बाप, शहर में जैसे प्रसिद्ध रायबहादुर होते हैं, ऐसे है। वह शहर में बहुत मशहूर है, उनसे सभी राय लेने के लिए आते हैं। तो हमारा पिता जी हमें बुलाता है, तो उन्हों को भी पता नहीं क्या अनुभव होता है, जो वह भी हमारे मस्तक को देखते रहते हैं। मस्तक से ही सेवा होती रहती है। फिर बाबा ने कहा सभी दादी को याद तो करते ही हैं, बाबा भी याद करता है। बाबा ने कहा जो भी मेरे मुरब्बी बच्चे गये हैं, तो जब भी कोई सेवा होती है, कोई भी नया प्लैन बनता है तो बाबा को यह बच्चे याद आते हैं कि यह बच्चे कैसे भाषण करते, यह बच्चे सबको सिखाकरके तो गये हैं, सभी अच्छी सर्विस कर रहे हैं फिर भी ऐसे टाइम पर यह सर्विसएबुल बच्चे याद आते हैं। दादी ने कहा आप जब हमको याद करते हैं तो पता है उस समय हमको क्या होता है! भले हम छोटे हैं, लेकिन संस्कार तो भरे हुए हैं। जब कोई याद करता है तो हमको ऐसे टच होता है जैसे कोई बुला रहा है। कुछ स्पष्ट नहीं होता है लेकिन जैसे कशिश आती है। बीच-बीच में बाबा वतन में सभी को इमर्ज करता है और सारा हालचाल पूछता है। तो मैं भी पूछती हूँ बाबा यह लोग अभी क्या कर रहे हैं? तो

बाबा एडवांस पार्टी और एडवांस स्टेज वाले, दोनों का समाचार सुनाता है। तो मैंने पूछा दादी बाबा ने आपको क्या सुनाया है? तो दादी ने कहा कि अभी जो साकार में हैं, उनमें इतना उमंग में नहीं हैं कि जल्दी हो, जल्दी हो, जल्दी घर वापस जायें, सभी आराम से रहे पड़े हैं। तो मैंने कहा फिर आप क्या करती हो? तो दादी ने कहा कि मैं मुस्कराके आप सभी को इमर्ज करके छोड़ देती हूँ।

फिर बाबा ने दादी को कहा कि सबको आपसे मिलने की इच्छा है, तो मिलकर आओ। तो दादी यहाँ मिलकर गई। फिर जब वतन में वापस आई तो दादी ने बाबा को कहा कि बाबा अभी सर्विस तो बहुत बढ़ गई है। अभी तो हमारा हाल भी छोटा लगने लगा है। तो बाबा ने कहा सर्विस तो बढ़नी ही है, लेकिन जो बाबा कहता है सृष्टि का परिवर्तन हो, दु:ख, अशान्ति खत्म हो। उसमें थोड़ा संकल्प से, कर्म से या अपने परिवर्तन से जो उमंग उत्साह होना चाहिए, वह कम दिखाई देता है। अभी बच्चों को और तीव्रगति से पुरुषार्थ करना है।

फिर जो भी इमर्ज हुए थे उन्हें बाबा ने कहा देखो आज मधुबन से आप सबके लिए कितना वैरायटी भोग आया है। बाबा उन सबके आगे भोग की डिब्बियां खोलता गया और कहा देखो तुम्हारे लिए क्या क्या बनाया है! बाबा ने पहले उनमें से 4-6 चीजें दादी को खिलाई फिर दादी को काम दिया कि आप सबको खिलाओ। तो दादी ने पहले बाबा को खिलाया फिर सबको खिलाया। फिर बाबा ने सबको बांहों में लेते हुए जो इमर्ज हुए थे उन्हें मर्ज करते कहा अच्छा बच्चे फिर मिलेंगे। ऐसे सबको छुट्टी दी। फिर मैं अकेली हो गई तो बाबा ने कहा सभी को कहना कि अभी पुरुषार्थ में तीव्र लगन होनी चाहिए, जाना है, जाना है, यह वायुमण्डल चारों ओर फैले जैसे सभी एवररेडी बैठे हैं। सेवा करते भी घर जाने की धुन में रहें। ऐसे मन्सा द्वारा, वाचा द्वारा सेवा करेंगे तो बाबा का जो इशारा है उसको प्रैक्टिकल में ले आयेंगे। तो अभी तीव्र पुरुषार्थ करके प्रैक्टिकल संकल्प के साथ जो भी परिवर्तन करना है, सेवा करना है, वह जल्दी-जल्दी करना है। ऐसे कहते बाबा ने हमें भी साकार वतन में भेज दिया। अच्छा - ओम् शान्ति।

ओम् शान्ति 24-8-09 मधुबन

''दादी के समान पवित्रता, सत्यता, नम्रता, धैर्यता और वाणी में मधुरता रखेंगे तो दाता बन जायेंगे''

– दादी जानकी

हमारी दादी ने काम ही ऐसा किया जो नाम हो गया प्रकाशमणि। वन्डर है मीठी दादी का, लास्ट में दादी लण्डन आई थी, दादी और हमारी आपस में बड़ी चिटचैट हुई। मैं कहूँ दादी बड़ी मीठी है, दादी कहे बाबा मीठा है। मेरे को कहा यहाँ इतनी अच्छी सभा है, तुम मधुबन में जाकर रहो, मैं यहाँ रह जाऊं। फिर दूसरे दिन बदल गई। बाबा कहता है बच्चे बाबा विचित्र है, विचित्र बाप को याद करो, उनका फोटो नहीं निकाल सकते। दादी ने भी ऐसा पार्ट बजाया है, प्रैक्टिकल में धारणा की है जो याद आती है, फोटो फोटो होती है, दादी तो प्रैक्टिकल में हम सबके सामने है।

एक साइंटिस्ट मधुबन में आया था, दादी को देखा, हमको भी देखा, हमने कहा यह तो बताओ - हम दादियों को ऐसा बनाने वाला कौन! मुश्किल से माना हाँ आपको बनाने वाला वह है। इन्स्ट्रुवमेंट को बनाने वाले ने बनाया, लेकिन चलाने वाले को अक्ल चाहिए। दादी से जो प्यार की दृष्टि ली, उसने साइंस के हिसाब से माना प्यार बहुत अच्छी चीज़ है, कैसी भी आत्मा को प्यार से अपना बना सकते हैं। परन्तु गाड इज लव उसका अनुभव यहाँ किया। हम दादी से क्या सीखे हैं? सच्चाई और प्रेम।

बाबा के दृष्टि की कमाल है। भाग्यवान वह जो बाप की नज़रों से ही चलता रहे, यह अनुभव कहता है - बाबा की नजरों से ही पार हुए हैं। नजरों से ही आगे बढ़े हैं। दादी ने बाबा को नजरों में रखा, दादी की नज़रों से हम सबने वह अनुभव किया, उसके फल स्वरूप यह सभा देख रहे हैं। बाबा जब अव्यक्त हुए, तो सबको लग रहा था, अभी मुरली कैसे सुनेंगे? बाबा ने डायरेक्शन दिया - दादी मुरली सुनायेगी। हम सब उसी भावना से मुरली सुनते रहे। मधुबन में जो मुरली सुनते पढ़ते हैं, तो ऐसे लगता है बाबा के सम्मुख बैठे हैं। मधुबन के मुरली की महिमा है।

जो अच्छी भक्त क्वालिटी वाली आत्मा है वह धक से समर्पित हो जाती है। जैसे बाबा को एक बार ही साक्षात्कार हुआ और

समर्पित हो गया। फिर सबको ब्रह्मा बाबा का साक्षात्कार होने लगा। जो ऊंचे भक्त होंगे उनको विष्णु का साक्षात्कार होगा। जो बच्चे बनने वाले हैं, उनको ब्रह्मा बाबा का सा. होता है। यह कहेगा उसको याद कर, वह कहेगा इसको फालो कर।

जैसे दादी चारों सबजेक्ट में नम्बरवन रही है। ज्ञान भी नम्बरवन, योग भी नम्बरवन। धारणा में कोई कमी नहीं, सम्पूर्ण निर्विकारी। एक भी कला कम नहीं रही। अभी तक दादी अपना अनुभव करा रही है, अब हमको क्या करना है? सिर्फ बाबा बाबा, दादी दादी करते रहें, बेबी थोड़ेही हैं। बच्चा माना जैसा बाप। दादी को देखते हैं, तो दादी ने क्या किया? बाबा को फालो किया तो हम भी बाबा को फालो करें।

ड्रामा बना बनाया है। अब भी अपने पार्ट को याद करें, मैं कल्प पहले थी, अभी भी हूँ फिर भी होंगी। थी, हैं, होंगी। अब क्या करना है? फालो फादर, ऐसा त्याग जो भूल से भी जो त्याग किया उसमें दृष्टि न जावे। यह भी शब्द न आवे मैंने त्याग किया है। क्या किया है? परतन्त्र से बाबा ने स्वतन्त्र बना दिया। परतन्त्र में कई बातें आती हैं, आजकल की माया है – भाव-स्वभाव। और सब कुछ त्याग किया, शुद्ध आहारी हो गये, सफेद कपड़े पहनकर ब्रह्माकुमार कुमारी बन गये लेकिन किसके भाव-स्वभाव में न आये। बुद्धि किसी चक्कर में न आये, टक्कर न खाये तो बाबा कहेगा यह बच्ची सदोरी है, समझदार है। हर आत्मा का अपना पार्ट है, हर आत्मा में अपनी विशेषता है। हम उसकी विशेषता देखेंगी तो वह भी हमारी देखेगी। यह भी हिसाब किताब है, अगर मैंने विशेषता नहीं देखी तो यह भी बड़ी परतन्त्रता है। बाबा ने हमको कितना स्वतन्त्र बना दिया है। स्वराज्य अधिकारी बना दिया है। मैं आत्मा कर्मेन्द्रियों का राजा हूँ, यह जो सूक्ष्म पहला पुरुषार्थ का पाठ है, वह पक्का करना है, जिससे मैंपन का अभिमान चला जाये। मेरा बाबा है तो बस नष्टोमोहा, स्मृति सारी कल्प पहले वाली आयेगी। मेरा घर परमधाम है, मेरा बाबा स्वर्ग की राजाई दे रहा है। कर्म ऐसे करो जो स्वर्ग हमारे हाथों में आ जाए। जो बाहर से आते हैं वह यहाँ स्वर्ग का अनुभव अभी भी करते हैं। तो हम अपने से पूछें स्वर्ग स्थापन करने वाला, ऐसी क्वालिटी वाला हूँ! हम पवित्रता, सत्यता से देवता बन रहे हैं। अभी दाता पन के संस्कार हैं? वह संस्कार तब आयेंगे जब नम्रता, धैर्यता, वाणी में मधुरता रखेंगे। जैसे दादी में प्रैक्टिकल देखा।

बाबा ने पांव पड़ना तो छुड़ा दिया, हमारे कोई पांव न पड़े पर चमकता हुआ स्टार आत्मा दिखाई पड़े। एक दो को ऐसे देखें ना। यह अन्दर गुप्त दिन रात, मैं बाबा की हूँ, आत्मायें सब भाई भाई हैं, आपस में बहन भाई हैं, यह प्रैक्टिस होनी चाहिए। जब तक यह प्रैक्टिस नहीं की है तब तक मतभेद नहीं जायेगा। भाषा भेद, जाति भेद चला गया, पर मतभेद हमारे अन्दर असुल न हो। मैं हर एक के भाव को समझूँ, सब मेरे भाव को समझें। जैसे हमने बाबा के भाव को समझा है, ऐसे हमारी भावना ऐसी हो जो एक दो की बात को समझकर इतने स्नेही सहयोगी रहें, जो सब कहें कमाल है इनकी। दादी कभी मतभेद में नहीं आई। हमने कभी आपस में डिबेट की नहीं होगी, एक शब्द में ही स्वीकार किया। जी जी करने से इतना फायदा हुआ है। हाँ जी किया, बाबा हाजिर हो जाता है। बच्ची हाँ जी किया है तो हजूर हाज़िर रहेगा। हज़ूर हमारे सामने हाजिर रहे तो हमारे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं। हमारे कदम कदम में कमाई है, ध्यान रखा है। जैसा बाबा कराये, कदम हमको उठाना पड़ेगा। उसको फालो करो, बस। अभी बाबा, दादी की बातें सुनते सुनते हम भी पार चले जायेंगे। कोई भी बात है, बात आई और गई, मैं आगे चली गई। कोई बात में हम रुकने वाले नहीं हैं, हमें कोई रोक नहीं सकता। अभी मंजिल के समीप आकर पहुंचे हैं, उड़कर चलना है। चलने का टाइम पूरा हो गया, अभी उड़कर पहुंचना है। अच्छा।

ओम् शान्ति 25-8-09 मधुबन

''मीठी दादी के पुण्य स्मृति दिवस पर मन-वाणी-कर्म की श्रेष्ठता से पुण्य का खाता जमा कर लो''

— दादी जानकी

हमारी दादी, मीठी दादी, प्यारी दादी हमारे लिए एक आइना है। समर्पण हम सब हुए हैं, दादी हमारे आगे दर्पण है अपने आपको देखने के लिए। जैसे स्वयं को देखने के लिए मनमनाभव का मन्त्र है, ऐसे दादी हमारे लिए दर्पण है, जिसमें देख सकते हैं - मैं कौन

हूँ? दादी ने भी देखा मैं कौन हूँ, मेरा कौन है और मुझे क्या करने का है! जो बाबा ने किया, उनसे भी 10 गुणा, 100 गुणा ज्यादा करके, कराने वाला बाबा है, नाम बाला बाबा का किया। ऊपर शान्ति स्तम्भ है, यहाँ प्रकाश स्तम्भ है। तो समर्पण लाइफ, मैं मेरा से दूर, मन वाणी कर्म नम्बरवन श्रेष्ठ। आत्मा हम भी हैं, यह भी है, सभी हैं पर मन वाणी कर्म से सदा श्रेष्ठ प्रकाशमणि दादी है। दादी के मुख से कभी किसकी कमी नहीं सुनी है। जैसे मम्मा ने दृष्टि से पालना दी है, वैसे कराची में हम दादी को मुन्नी मम्मा कहते थे। मम्मा मम्मा है, यह मुन्नी मम्मा है। पालना देने में, पढ़ाने में, सबका ध्यान रखने में, हर बात में एक्यूरेट रहने में, जो बाबा सेवा कहे वह करने में, जो इशारा मिला वह फौरन मन वाणी कर्म से किया और कराया।

आज सबको दादी की विशेष स्मृति आ रही है। स्मृति आती है अपने को चेक करने के लिए, ताकि पता चले मेरी स्मृति कैसी है। दादी समर्पण के साथ, एकदम स्वच्छता, सत्यता में नम्बरवन रही है। अभिमान की कभी अंश नहीं देखी। आवाज में कभी मैं पन नहीं देखा। यह मेरा है, कभी अटैचमेंट नहीं देखी। जब पहले पहले दादी लण्डन में आई तो ऐसे लगा जैसे बाबा मेरे पास आया है। दो शिक्षा दादी ने दी। ठण्डी के कारण क्लास रूम में योग करने नहीं जाती थी, दादी ने ध्यान खिंचवाया, अमृतवेले संगठन में योग करना चाहिए, तब से लेकर चारपाई पर वा कमरे में योग नहीं करती हूँ। फिर दूसरा ट्रैफिक कन्ट्रोल पर दादी ने ध्यान खिंचवाया, इसमें भी कभी अलबेली नहीं रही हूँ। नेचर या स्वभाव संस्कार में अलबेलापन बड़ा नुकसानकारक है, इस कारण से मन वाणी कर्म श्रेष्ठ नहीं हो सकता। मुख्य बात है संकल्प की। संकल्प ऐसा स्वच्छ, श्रेष्ठ हो जो मुख और नयनों से सुनने वाले, देखने वालों का अंधकार मिट जाए, प्रकाश मिल जाए। ऐसी हमारी दादी प्रकाशमणि ने अंधकार मिटाया है, प्रकाश में लाया है।

दादी से जो हम लोगों ने प्यार पालना पाई है, भले साथ कम रहे हैं पर सूक्ष्म में साथी हैं। भले दादी अव्यक्त होकर अपना पार्ट प्ले कर रही है, हम यहाँ हैं। पर साथ-साथ रहना है, साथ-साथ जाना है, पीछे नहीं जाना है। कोई भी बात देखो नहीं, सुनो नहीं, सोचो नहीं। सोच में आई, मुख वाणी में आई तो मेरा खाता कौन सा बना? मन-वाणी कर्म से पुण्य कर्म का खाता जो दादी ने प्रैक्टिकल में जमा किया है, कर्म उसने किये हैं, फल हम खा रहे हैं। दादी ने बाबा बाबा करते सबको सेवाधारी बना दिया, सेवा में लगा दिया। तो आज पुण्य स्मृति दिवस है, हम भी ऐसा पुण्य जमा कर लें।

मीठी मीठी दादी के प्रति हम श्रंधाजलि क्या दें, हम अपनी श्रधा भावना से यह संकल्प करते हैं, दादी आपकी जो भावना रही है, वह पूरी करके दिखायेंगे। दादी के प्यार में जो सब दौड़ते दौड़ते पहुंचे हैं। दादी ने जो सभी पर अपने स्नेह की छाप लगाई है वह कभी मिट नहीं सकती। दादी ने सफल करना और कराना सिखाया है। श्वांस, संकल्प समय सब सफल हो, जो श्वांस चल रहा है वह निष्फल न जाये। श्वांस में स्मृति रखने से मजबूत हो जाते हैं। मनमनाभव का मंत्र अन्दर है, संकल्प श्वांस में समय को सफल करना है। समय जा रहा है, यह फिर हाथ में नहीं आयेगा। संगम की घड़ी, सेकण्ड सेकण्ड वापस नहीं आयेगी। धर्मात्मा, महात्मा श्रेष्ठ आत्मा बनना हो, अभी नम्बरवन में आना हो तो यह समय है, हर एक आ सकता है। दादी ने करके दिखाया है ना। हर एक कर सकता है, सहज है। तो स्वत: योगी, सहज योगी, जो ईश्वरीय स्नेह में खोये हुए हैं, जो उनके सामने आते हैं, वह भी खो जाते हैं। तो दादी ने सबको स्नेह देकर सहयोगी, नैचुरल योगी बना दिया है। योग में मेहनत न हो, मुहब्बत में खुद तो योगी औरों को भी योगी बना देवे। जो उसके संग में आवे उसको रंग लग जाये। यह है संग का रंग। जैसे बाप ने सबके संग में रहकर सत्य ज्ञान देकर ज्ञानी तू आत्मा बना दिया। ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर... बाबा मेरे में दिनरात ज्ञान वा प्रेम भर रहा है, इंजेक्शन भी लगा रहा है, डोज भी दे रहा है, सावधानी भी दे रहा है, आंख भी दिखा रहा है। सबसे बड़ी सावधानी मिली, तू अपने आपको देख, परचिंतन बन्द कर। यही दादी ने सिखलाया है। जो बात अनुभव में आ जाती है उसको जीवन में लाना सहज हो जाता है। हमें शब्द भी बहुत सम्भलकर बोलना है, ऐसे नहीं हमें तो पहले का अनुभव है, उन अनुभवों को भूल अभी के अनुभव की अथॉरिटी बन जायें। ऐसी बाबा की शिक्षाओं भरा श्रंगार जो दादी ने करके सिखलाया है, दिल में, मन में वही बातें है। बाकी जो हुआ ड्रामा। यहाँ बाबा, यहाँ ड्रामा, मुझे क्या करने का है? हम बीच में कौन हैं? हीरो पार्टधारी। आज का दिन दादी हमारे सामने है, हमको देखने के लिए। वह हमको देख रही है, हम उसको देख रहे हैं। चित्र को नहीं देख रहे हैं, जिसका चरित्र ऊंचा होता है उसका चित्र अन्दर चला जाता है। अच्छा। ओम् शान्ति।